

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 24-02-2025

रत्नागिरी के अवशेष: बौद्ध विरासत
NEP 2020 के अंतर्गत त्रिभाषा नीति
भारत-जापान अर्थव्यवस्था और निवेश मंच
लड़ाकू विमानों को लेकर भारत की दुविधा
हिमनद शैवाल ग्रीनलैंड के हिम चादर को पिघलाने में तीव्रता ला रहे हैं

संक्षिप्त समाचार

अली ऐ लिंगांग महोत्सव

छत्रपति शिवाजी महाराज के किले

लेपाक्षी मंदिर

होंडुरास

BOBP-IGO

शक्तिकांत दास नए प्रधान सचिव नियुक्त

अभिघातजन्य श्वासावरोध

मुद्रास्फीतिजनित मंदी/स्टैगफ्लेशन

वी.ओ.चिंदंबरनार बंदरगाह

पेरोव्स्काइट-आधारित LEDs (PeLEDs)

बैराइट्स, फेल्सपार, अभ्रक और क्वार्ट्ज का पुनर्वर्गीकरण

फाल्स किलर व्हेल (False Killer Whales)

लोक प्रशासन में उल्कृष्टता के लिए प्रधानमंत्री पुरस्कार

विषय सूची

A Pink Ball No One Saw Coming: In this very space in yesterday's edition, we'd written about how 'politics makes for strange bedfellows', referring to the tie up between political adversaries Shiv Sena and NCP-Cong. The dramatic developments of Friday night and Saturday prove that even a few hours - let alone a week - in a long

The Real Day-Night Test Is In Mumbai: SURGICAL STRIKE AT DAWN: BOTH SIDES CLAIM MAJORITY

Express Sunday November 24, 2019

EXPRESS

SATURDAY

SUNDAY

MONDAY

TUESDAY

WEDNESDAY

THURSDAY

FRIDAY

SATURDAY

SUNDAY

MONDAY

TUESDAY

WEDNESDAY

रत्नागिरी के अवशेष: बौद्ध विरासत

संदर्भ

- पुरातत्वविदों ने दिसंबर 2023 में ओडिशा के रत्नागिरी में 1.4 मीटर ऊँचे बुद्ध के सिर के साथ-साथ 1,500 वर्ष पुरानी पट्टिकाएँ और स्तूप खोजे हैं। यह महत्वपूर्ण खोज रत्नागिरी को वज्रयान (तांत्रिक बौद्ध धर्म) के एक प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित करती है, जो छठीं से बारहवीं शताब्दी ई. के बीच फला-फूला।
- हाल ही में हुई खुदाई प्राचीन बौद्ध विश्व में रत्नागिरी के कलात्मक, आध्यात्मिक और शैक्षिक महत्व पर प्रकाश डालती है।

रत्नागिरी का ऐतिहासिक महत्व

- रत्नागिरी, जिसका अर्थ है 'रत्नों की पहाड़ी', छठीं से बारहवीं शताब्दी ई. के बीच गुप्त एवं गुप्तोत्तर शासकों के संरक्षण में फली-फूली।
- यह ओडिशा में बौद्ध स्थलों के व्यापक नेटवर्क का भाग था, साथ ही ललितगिरि और उदयगिरि भी बौद्ध विरासत के 'हीरक त्रिभुज' का निर्माण करते थे।
 - शिलालेखों, बोधिसत्त्वों की छवियों और स्तूपों की उपस्थिति से संकेत मिलता है कि रत्नागिरी वज्रयान बौद्ध धर्म का एक प्रमुख केंद्र था।
- ऐसा माना जाता है कि इस स्थल ने भारत और उसके बाहर, विशेष रूप से दक्षिण-पूर्व एशिया में बौद्ध धर्म के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।



अवशेष और कलाकृतियाँ

- पवित्र स्तूप और अवशेष एकत्रण:** अवशेष ताबूतों की उपस्थिति, जिनमें कभी-कभी हड्डियों के टुकड़े, मोती या शिलालेख होते हैं, इन संरचनाओं से जुड़ी मजबूत धार्मिक श्रद्धा का सुझाव देते हैं।
- मठ (विहार) और आवासीय परिसर:** रत्नागिरी में दो अच्छी तरह से संरक्षित मठ (विहार) हैं, जो बौद्ध शिक्षा और ध्यान के केंद्र के रूप में कार्य करते थे।
 - बड़े मठ में एक भव्य प्रवेश द्वार, एक विशाल प्रांगण और भिक्षुओं के लिए कई कक्ष हैं।
 - इन मठों की दीवारें जटिल नक्काशी से सजी हैं, जिनमें तारा, अवलोकितेश्वर और मंजुश्री जैसे देवताओं के चित्रण शामिल हैं।
- उत्कृष्ट बौद्ध मूर्तियाँ:**
 - भूमिस्पर्श मुद्रा (पृथ्वी को छूने वाली मुद्रा) में बैठे हुए बुद्ध, जो ज्ञान का प्रतीक है।

- ध्यानी बुद्ध बौद्ध दर्शन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- अवलोकितेश्वर और मैत्रेय जैसे बोधिसत्त्वों की छवियाँ।
- तारा जैसी देवी, तांत्रिक बौद्ध धर्म के प्रभाव को दर्शाती हैं।
- शिलालेख और ताम्रपत्र:** ब्राह्मी और संस्कृत लिपियों में कई शिलालेख खोजे गए हैं, जो मूल्यवान ऐतिहासिक अभिलेख प्रदान करते हैं।
 - इन शिलालेखों में बौद्ध राजाओं के संरक्षण, मठों को दिए गए दान और रत्नागिरी में अपनाई गई शिक्षाओं का उल्लेख है।
 - कुछ शिलालेख नालंदा और विक्रमशिला जैसे दूर के बौद्ध केंद्रों के साथ संबंधों का संकेत देते हैं।
- टेराकोटा मुहरें और पांडुलिपियाँ:** उत्खनन से टेराकोटा मुहरें भी मिली हैं जिन पर 'श्री रत्नागिरी महाविहारी आर्य भिक्षु संघस्य' लिखा हुआ है, जो दर्शाता है कि रत्नागिरी एक महत्वपूर्ण मठयुक्त विश्वविद्यालय था।

- प्राचीन पांडुलिपियों के टुकड़े शास्त्र अध्ययन और बौद्ध शिक्षा की उपस्थिति का सुझाव देते हैं।

वज्रयान बौद्ध धर्म में रत्नागिरी की भूमिका (एक तांत्रिक रूप)

- वज्रयान देवताओं के अनेक चित्रण और गूढ़ बौद्ध प्रतीकों की उपस्थिति से पता चलता है कि यह स्थल तांत्रिक बौद्ध प्रथाओं का एक प्रमुख केंद्र था।
- ऐसा माना जाता है कि रत्नागिरी ने पूरे भारत और उसके बाहर से विद्वानों, भिक्षुओं एवं साधकों को आकर्षित किया, जिससे बौद्ध दर्शन के प्रसार में योगदान मिला।

हीनयान और महायान बौद्ध धर्म

- कुषाण राजा कनिष्ठ के संरक्षण में कश्मीर में आयोजित चतुर्थ बौद्ध संगीति (72ई.) में बौद्ध धर्म को दर्शन, व्यवहार और बौद्ध शिक्षाओं की व्याख्या में मतभेद के कारण हीनयान एवं महायान संप्रदायों में विभाजित कर दिया गया था।

हीनयान बौद्ध धर्म (छोटे वाहन, उर्फ थेरवाद बौद्ध धर्म)

- यह बुद्ध की शिक्षाओं का सख्ती से पालन करके व्यक्तिगत ज्ञान (अरहत आदर्श) पर बल देता है।
- यह मठवासी अनुशासन और सबसे पुराने बौद्ध धर्मग्रंथों (पाली कैनन या त्रिपिटक) पर केंद्रित है।
- बुद्ध का दृष्टिकोण:** ऐतिहासिक शिक्षक
- यह श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, लाओस एवं कंबोडिया में प्रचलित है, और इसे प्रायः इसका जीवित प्रणाली माना जाता है।

महायान बौद्ध धर्म (महायान)

- इसे बाद में (लगभग पहली शताब्दी ईसा पूर्व) विकसित किया गया था, जिसमें करुणा और बोधिसत्त्व आदर्श (सभी प्राणियों के लिए ज्ञान की खोज यानी सार्वभौमिक ज्ञान या बोधिसत्त्व मार्ग) पर बल दिया गया था।
- इसमें पाली कैनन से परे कई ग्रंथ शामिल हैं, जैसे लोटस सूत्र और प्रज्ञापारमिता सूत्र (संस्कृत और चीनी ग्रंथ)।
- बुद्ध का दृष्टिकोण:** दिव्य आकृति, कई बुद्ध चीन, कोरिया, जापान, तिब्बत और वियतनाम में फैले, जिससे ज्ञेन, प्योर लैंड एवं वज्रयान जैसी आगे की शाखाएँ बनीं।

NEP 2020 के अंतर्गत त्रिभाषा नीति

संदर्भ

- केंद्र ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 और इसके त्रिभाषा फॉर्मूले को लागू करने से राज्य के इनकार के कारण समग्र शिक्षा योजना के अंतर्गत तमिलनाडु को मिलने वाली धनराशि रोक दी है।
- तमिलनाडु दो-भाषा नीति (तमिल और अंग्रेजी) का पालन करता है और हिंदी को अपनी भाषाई पहचान के लिए खतरा मानते हुए निरंतर इसका विरोध करता रहा है।

त्रिभाषा फार्मूला क्या है?

- NEP 1968 ने पूरे देश में हिंदी को अनिवार्य बना दिया, जिसमें राज्यों के लिए विशिष्ट भाषा आवश्यकताएँ थीं।
 - हिंदी भाषी राज्यों को हिंदी, अंग्रेजी और एक आधुनिक भारतीय भाषा (अधिमानतः एक दक्षिण भारतीय भाषा) पढ़ानी थी।
 - गैर-हिंदी भाषी राज्यों से स्थानीय भाषा, हिंदी और अंग्रेजी पढ़ाने की अपेक्षा की गई थी।
- NEP 2020 ने 1968 की NEP में प्रारंभ किए गए तीन-भाषा फॉर्मूले को बरकरार रखा है।
 - राज्य, क्षेत्र और छात्र तीन भाषाओं का चयन कर सकते हैं, जब तक कि कम से कम दो भारत की मूल भाषाएँ हों।
 - राज्य की भाषा के अतिरिक्त, बच्चों को एक अन्य भारतीय भाषा (जरूरी नहीं कि हिंदी) सीखनी चाहिए।
 - देश की भाषा/मातृभाषा और अंग्रेजी पर ध्यान केंद्रित करते हुए द्विभाषी शिक्षण पर जोर दिया गया है।
 - तीन-भाषा फॉर्मूले में वैकल्पिक विकल्प के रूप में संस्कृत पर विशेष बल दिया गया है।

त्रि-भाषा सूत्र का महत्त्व

- बहुभाषी दक्षता में वृद्धि: छात्रों को कई भाषाएँ सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिससे संज्ञानात्मक कौशल और संचार में सुधार होता है।

- राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक आदान-प्रदान:** गैर-हिंदी राज्यों में हिंदी और हिंदी भाषी राज्यों में क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देकर उत्तर-दक्षिण भाषाई विभाजन को समाप्त करने में सहायता करता है।
- रोजगार और आवागमन के अवसरों में वृद्धि:** कई भाषाओं का ज्ञान कैरियर की संभावनाओं को बढ़ाता है और विभिन्न राज्यों में रोजगारों और उच्च शिक्षा के लिए प्रवास को आसान बनाता है।
- क्षेत्रीय भाषाओं को मजबूत बनाता है:** सुनिश्चित करना कि क्षेत्रीय भाषाओं का सक्रिय रूप से उपयोग और संरक्षण जारी रहे।

चिंताएँ क्या हैं?

- हिंदी का कथित आरोपण:** गैर-हिंदी भाषी राज्य, विशेष रूप से तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और कर्नाटक, इसे हिंदी के आरोपण का प्रयास मानते हुए इसका विरोध करते हैं।
- व्यावहारिक कार्यान्वयन चुनौतियाँ:** कई स्कूलों में अतिरिक्त भाषाएँ पढ़ाने के लिए योग्य शिक्षकों की कमी है।
- छात्रों पर भार:** अतिरिक्त भाषा सीखने से शैक्षणिक बोझ बढ़ सकता है, विशेषकर उन छात्रों के लिए जो भाषा अधिग्रहण के साथ संघर्ष करते हैं।
- विदेशी भाषाओं की संभावित उपेक्षा:** कुछ लोग तर्क देते हैं कि तीसरी भारतीय भाषा के बजाय, छात्रों को अंतर्राष्ट्रीय अवसरों में सुधार करने के लिए फ्रेंच, जर्मन या मंदारिन जैसी वैश्विक भाषाएँ सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

आगे की राह

- केंद्र एवं राज्य के बीच रचनात्मक संवाद और व्यावहारिक समझौता ही आगे बढ़ने की राह है।
- आपातकाल के दौरान शिक्षा को समर्वर्ती सूची में स्थानांतरित कर दिया गया था, जिससे यह एक साझा जिम्मेदारी बन गई।
- तीसरी भाषा पर असहमति से समग्र शिक्षा, जो एक प्रमुख शिक्षा कार्यक्रम है, के लिए वित्त पोषण में बाधा नहीं आनी चाहिए।

PM SHRI योजना

- उद्देश्य:** इस योजना का उद्देश्य मौजूदा सरकारी स्कूलों को मॉडल स्कूलों में बदलना है।
 - यह योजना पूरे देश में केंद्र सरकार और राज्य एवं स्थानीय सरकारों द्वारा संचालित मौजूदा प्राथमिक, माध्यमिक तथा वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के लिए है।
- वित्त पोषण:** यह देश भर में लगभग 14,500 स्कूलों को बदलने के लिए 2022-23 से 2026-27 तक पाँच वर्षों की अवधि के लिए केंद्र द्वारा प्रायोजित योजना है।

समग्र शिक्षा अभियान

- यह योजना प्री-स्कूल से कक्षा 12 तक विस्तृत है और इसका उद्देश्य स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर समावेशी और समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना है।
- इस योजना में सर्व शिक्षा अभियान (SSA), राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA) और शिक्षक शिक्षा (TE) की तीन पूर्ववर्ती केंद्र प्रायोजित योजनाएँ शामिल हैं।
- योजना के प्रमुख उद्देश्य हैं:
 - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) की सिफारिशों को लागू करने में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को सहायता प्रदान करना;
 - बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार (RTE) अधिनियम, 2009 के कार्यान्वयन में राज्यों को सहायता प्रदान करना;
 - बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता पर बल;
 - शिक्षक प्रशिक्षण के लिए नोडल एजेंसी के रूप में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों (SCERTs)/राज्य शिक्षा संस्थानों और जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों (DIET) को मजबूत और उन्नत बनाना;
 - व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देना।
- इस योजना के अंतर्गत सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को उपरोक्त गतिविधियाँ चलाने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

Source: TH

भारत-जापान अर्थव्यवस्था और निवेश मंच

संदर्भ

- हाल ही में भारत-जापान अर्थव्यवस्था एवं निवेश फोरम का आयोजन किया गया।

परिचय

- व्यापार अधिशेष पर चिंता:** केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने भारत के साथ जापान के बढ़ते व्यापार अधिशेष पर चिंता व्यक्त की।
- निर्यात में स्थिरता:** जापान को भारत का निर्यात पिछले 15 वर्षों से स्थिर बना हुआ है।
 - भारत में कई जापानी निवेश कोरिया, जापान, ताइवान और चीन जैसे देशों से उत्पाद प्राप्त करते हैं, जो भारत को मुख्य रूप से अपने माल के लिए बाजार के रूप में उपयोग करते हैं।
- जापान का बढ़ता निर्यात:** भारत में जापानी निर्यात लगातार बढ़ रहा है, जिससे व्यापार असंतुलन खराब हो रहा है।
- असंतुलन को संबोधित करने पर ध्यान:** केंद्रीय मंत्री ने दोनों देशों के बीच व्यापार में इस बढ़ती असमानता को संबोधित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।
 - उन्होंने जापानी कंपनियों से भारत में ऐसी वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने का आग्रह किया, जिन्हें जापान को निर्यात किया जा सके, जिसका उद्देश्य व्यापार संबंधों को संतुलित करना है।

भारत और जापान संबंधों पर संक्षिप्त जानकारी

- ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध:** दोनों देश आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं को साझा करते हैं, जैसे कि जापान के सात भाग्यशाली देवताओं पर हिंदू धर्म का प्रभाव एवं 752 ई. में जापान के तोडाजी मंदिर में भारतीय भिक्षु बोधिसेना द्वारा भगवान् बुद्ध की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा जैसे ऐतिहासिक संबंध।
- संबंधों की स्थापना:** द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात, भारत ने जापान के साथ एक अलग शांति संधि का विकल्प चुना, जिस पर 1952 में हस्ताक्षर किए गए, जिसने

औपचारिक राजनयिक संबंधों की शुरुआत को चिह्नित किया।

- रणनीतिक सामंजस्य:** दोनों देश भारत की एक्ट-ईस्ट पॉलिसी, इंडो-पैसिफिक विजन (SAGAR) और जापान के फ्री एंड ओपन इंडो-पैसिफिक विजन जैसी प्रमुख क्षेत्रीय पहलों पर एकमत हैं।
- व्यापार और निवेश:** जापान भारत की आर्थिक वृद्धि में एक महत्वपूर्ण सहयोगी है, 2000 से 2024 तक जापान से FDI \$43 बिलियन से अधिक हो गया है, जिससे यह भारत का विदेशी निवेश का पाँचवाँ सबसे बड़ा स्रोत बन गया है।
 - 2023-24 में, जापान को देश का निर्यात \$5.15 बिलियन और आयात \$17.7 बिलियन था। व्यापार घाटा \$12.55 बिलियन था।
- वैश्विक पहलों पर सहयोग:** जापान और भारत अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA), आपदा रोधी अवसंरचना के लिए गठबंधन (CDRI), और उद्योग परिवर्तन के लिए नेतृत्व समूह (LeadIT) जैसी पहलों में सहयोग करते हैं।
 - दोनों देश जापान-ऑस्ट्रेलिया-भारत-अमेरिका क्वाड और भारत-जापान-ऑस्ट्रेलिया आपूर्ति शृंखला लचीलापन पहल (SCRI) जैसे बहुपक्षीय ढाँचों में एक साथ कार्य करते हैं।
- एकीकृत रक्षा साझेदारी:** भारत-जापान रक्षा सहयोग द्विपक्षीय संबंधों का एक प्रमुख स्तंभ है, जो इंडो-पैसिफिक शांति, सुरक्षा और स्थिरता पर केंद्रित है।
- मुख्य समझौते:**
 - सुरक्षा सहयोग पर संयुक्त घोषणा (2008)।
 - रक्षा सहयोग ज्ञापन (2014)।
 - रक्षा उपकरण और प्रौद्योगिकी (2015) और वर्गीकृत सैन्य सूचना के संरक्षण (2015) पर समझौते।
 - आपूर्ति और सेवा समझौते का पारस्परिक प्रावधान (2020)।
 - अभ्यास और संयुक्त गतिविधियाँ:** समुद्री अभ्यास मालाबारा।

- जापान में प्रथम द्विपक्षीय लड़ाकू अभ्यास, बीच गार्जियन (2023)।
- जापान में पहली बार सेना-से-सेना अभ्यास धर्म गार्जियन आयोजित किया गया (2023)।
- भारतीय वायुसेना और JASDF के बीच अभ्यास शिन्नु मैत्री।
- दो देशों के बीच JIMEX संयुक्त नौसेना अभ्यास।
- **भारत में कनेक्टिविटी परियोजनाएँ:** जापान की तकनीकी और वित्तीय सहायता से मुंबई से अहमदाबाद तक प्रथम हाई स्पीड रेल (HSR) कॉरिडोर लागू किया जा रहा है।
 - वर्तमान में, छह मेट्रो रेल परियोजनाएँ (अहमदाबाद, बैंगलोर, चेन्नई, दिल्ली, कोलकाता, मुंबई) जापान की तकनीकी और वित्तीय सहायता से कार्यान्वित की जा रही हैं।
- **अंतरिक्ष सहयोग:** इसरो और JAXA एक्स-रे खगोल विज्ञान, उपग्रह नेविगेशन, चंद्र अन्वेषण और एशिया प्रशांत क्षेत्रीय अंतरिक्ष एजेंसी फोरम (APRSAF) में सहयोग करते हैं। 2016 में, उन्होंने शांतिपूर्ण अंतरिक्ष अन्वेषण और उपयोग के लिए एक सहयोग ज्ञापन (MoC) पर हस्ताक्षर किए।

चुनौतियाँ

- **व्यापार असंतुलन:** एक महत्वपूर्ण व्यापार असंतुलन है, जापान भारत को जितना निर्यात करता है, उससे कहीं अधिक भारत जापान को निर्यात करता है, जिससे बेहतर पारस्परिक व्यापार की ज़रूरत उत्पन्न होती है।
- **भू-राजनीतिक तनाव:** क्षेत्रीय सुरक्षा मुद्दे, जैसे कि इंडो-पैसिफिक में चीन का प्रभाव, भारत-जापान संबंधों के लिए चुनौतियाँ प्रस्तुत करते हैं, जिसके लिए सावधानीपूर्वक कूटनीतिक संतुलन की ज़रूरत होती है।
- **सांस्कृतिक और भाषाई बाधाएँ:** मजबूत संबंधों के बावजूद, भाषा, संस्कृति और व्यावसायिक प्रथाओं में अंतर गहन एकीकरण के लिए चुनौतियाँ प्रस्तुत करते हैं।

- **लोगों के बीच सीमित आदान-प्रदान:** लोगों के बीच बातचीत का पैमाना अभी भी सीमित है, जिससे गहरी आपसी समझ प्रभावित होती है।
- **बुनियादी ढाँचे की बाधाएँ:** सुधारों के बावजूद, भारत के कुछ क्षेत्रों में अभी भी बड़े पैमाने पर जापानी निवेश को प्रभावी ढंग से समर्थन देने के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचे का अभाव है।
- **अलग-अलग आर्थिक प्राथमिकताएँ:** भारत का तेज आर्थिक विकास पर ध्यान कभी-कभी जापान के सतत् विकास और प्रौद्योगिकी पर बल के विपरीत हो सकता है।

आगे की राह

- **व्यापार और निवेश को बढ़ावा देना:** जापान को भारतीय निर्यात बढ़ाकर और भारत के विनिर्माण एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में जापानी निवेश को प्रोत्साहित करके व्यापार असंतुलन को कम करने पर ध्यान केंद्रित करना।
- **लोगों के बीच संपर्क को बढ़ावा देना:** आपसी समझ को गहरा करने के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान, पर्यटन और शैक्षिक सहयोग बढ़ाना।
- **प्रौद्योगिकी और नवाचार साझेदारी:** प्रौद्योगिकी में जापान की विशेषज्ञता और भारत के बढ़ते डिजिटल क्षेत्र का लाभ उठाकर AI, रोबोटिक्स, नवीकरणीय ऊर्जा एवं अंतरिक्ष अन्वेषण में सहयोग करना।
- **पर्यावरण संबंधी चिंताओं को संबोधित करना:** दोनों देशों के हरित ऊर्जा लक्ष्यों का समर्थन करने के लिए पर्यावरणीय स्थिरता, जलवायु परिवर्तन और आपदा प्रतिरोधकता पर सहयोग बढ़ाना।

Source: PIB

लड़ाकू विमानों को लेकर भारत की दुविधा समाचार में

- F-35 और SU-57 दोनों ने बैंगलुरु में एयरो इंडिया 2025 में ध्यान आकर्षित किया, जिसमें SU-57 अपने युद्धाभ्यास के लिए शोस्टॉपर रहा।

भारत का उभरता लड़ाकू विमान परिदृश्य

- भारतीय वायु सेना (IAF) के पास 42.5 लड़ाकू स्क्वाड्रन की स्वीकृत क्षमता है, लेकिन वर्तमान में उसके पास 31 स्क्वाड्रन हैं, जिनमें से कई में पुराने विमान हैं।
- भारत को चीन और पाकिस्तान के साथ दो मोर्चों पर चुनौती का सामना करना पड़ रहा है।
 - इस चुनौती से निपटने के लिए भारत अमेरिकी F-35 और रूसी Su-57 जैसे उन्नत जेट विमानों की खोज कर रहा है।

क्या आप जानते हैं ?

- चीन, रूस और अमेरिका जैसे देश पहले ही पाँचवीं पीढ़ी के जेट विमानों को शामिल कर चुके हैं, जबकि चीन छठी पीढ़ी के उन्नत जेट विकसित कर रहा है।
- पाकिस्तान चीन से पाँचवीं पीढ़ी के J-35 जेट विमान हासिल करना चाहता है।

भागीदारी

- अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा कि अमेरिका भविष्य में भारत को F-35 स्टील्थ लड़ाकू विमान दे सकता है।
 - F-35 एक सिंगल-सीट, सिंगल-इंजन स्ट्राइक फाइटर है, जिसके तीन वैरिएंट हैं
 - F-35 की लागत प्रति विमान लगभग 100 मिलियन डॉलर है, जिसका विकास और रखरखाव लागत 2088 तक 2 ट्रिलियन डॉलर से अधिक है।
- भारत और रूस ने प्रारंभ में FGFA (SU-57) को एक साथ विकसित करने की योजना बनाई थी, लेकिन उच्च लागत और सीमित प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के कारण भारत पीछे हट गया।
- स्वीडिश कंपनी साब ने मल्टी-रोल फाइटर एयरक्राफ्ट (MRFA) कार्यक्रम में भाग लेने में रुचि दिखाई है, जहाँ IAF का लक्ष्य अपने घटते बेड़े को मजबूत करने के लिए 114 जेट खरीदना है।

नया दृष्टिकोण

- भारत का बेड़ा, जो ऐतिहासिक रूप से रूसी सैन्य हार्डवेयर पर निर्भर रहा है, 2000 के दशक की शुरुआत में विविधतापूर्ण होना प्रारंभ हुआ।

- भारत अब अपने स्वदेशी उन्नत मध्यम लड़ाकू विमान (AMCA) पर ध्यान केंद्रित करने की योजना बना रहा है।
- 2040 तक, IAF की योजना 220 LCA-Mk1s, 120 LCA-Mk2s और AMCA लड़ाकू विमानों के शुरुआती बैच की है।
- भारत का लक्ष्य 500 से अधिक लड़ाकू जेट प्राप्त करना है, मुख्य रूप से LCA वेरिएंट और AMCA पर ध्यान केंद्रित करना है।
- AMCA प्रोटोटाइप 2026-2027 तक आने की संभावना है, 2034 तक शामिल किया जाएगा।
- LCA-Mk1A की डिलीवरी में देरी हुई, और LCA-Mk2 के 2026 तक उड़ान भरने की संभावना है।

आवश्यकता

- भारत का लड़ाकू जेट परिदृश्य महत्वपूर्ण परिवर्तन से गुजर रहा है क्योंकि देश अपनी वायु सेना का आधुनिकीकरण करना चाहता है और अपनी रक्षा क्षमताओं को बढ़ाना चाहता है।
- यह परिवर्तन वर्तमान चुनौतियों का समाधान करने और भविष्य के खतरों के लिए तैयार रहने की आवश्यकता से प्रेरित है।

चिंताएँ

- भारत अभी भी अपने लड़ाकू विमानों और हेलीकॉप्टरों के लिए अमेरिका और फ्रांस में बने इंजनों पर निर्भर है, जिससे महत्वपूर्ण प्रणालियों के लिए विदेशी आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भरता बढ़ रही है।
 - इसके लाभों के बावजूद, निर्भरता के मुद्दे उत्पन्न हुए हैं।
- F-35 जैसे उन्नत लड़ाकू विमानों को शामिल करने से परिचालन लचीलेपन, रखरखाव और स्वदेशी विनिर्माण प्रयासों पर प्रभाव से संबंधित चुनौतियाँ आएँगी।
- रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए अमेरिका और रूस जैसे रक्षा आपूर्तिकर्ताओं के साथ संबंधों को संतुलित करना जटिल है।

निष्कर्ष और आगे की राह

- भारत का विकसित होता लड़ाकू विमान परिदृश्य राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने और रक्षा में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
- वर्तमान चुनौतियों का समाधान करके और भविष्य के लिए रणनीतिक योजना बनाकर, भारत एक ऐसी मजबूत वायु सेना का निर्माण कर सकता है जो उभरते खतरों का सामना करने में सक्षम हो।

Source: TH

हिमनद शैवाल ग्रीनलैंड के हिम चादर को पिघलाने में तीव्रता ला रहे हैं

संदर्भ

- एक अध्ययन में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि किस प्रकार गहरे रंग वाले सूक्ष्म शैवाल, बिना किसी अतिरिक्त पोषक तत्व के, अनावृत बर्फ पर कुशलतापूर्वक नियंत्रण करके ग्रीनलैंड की हिम की चादर को पिघलाने में तीव्रता लाते हैं।

मुख्य निष्कर्ष

- बर्फ पिघलाने में शैवाल की भूमिका:** गहरे रंग के सूक्ष्म शैवाल उजागर बर्फ की सतहों पर तेजी से बढ़ते हैं।
 - उनका रंग हिम की परावर्तकता को कम करता है, गर्मी अवशोषण को बढ़ाता है और पिघलाने में तेजी लाता है।
- कुशल पोषक तत्व अवशोषण:** हिम शैवाल फास्फोरस को संगृहित करते हैं और उच्च कार्बन-से-पोषक अनुपात को बनाए रखते हैं, जिससे पोषक तत्वों की कमी वाली स्थितियों में जीवित रहना संभव होता है।
- महत्व:** अध्ययन जलवायु अनुमानों में जैविक कारकों को एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देता है।
 - आल्प्स, हिमालय और अलास्का में भी हिम शैवाल पाए गए हैं, जो सुझाव देते हैं कि इसी तरह की जैविक प्रक्रियाएँ वैश्विक स्तर पर ग्लेशियर के पीछे हटने में योगदान दे सकती हैं।

हिम शैवाल

- हिम शैवाल एक कोशिकीय, लम्बी, भूरे रंग के और दीर्घवृत्ताकार सूक्ष्मजीव हैं जो विश्व भर में हिम की सतह पर पनपते हैं।
- पौधों की तरह, वे प्रकाश संश्लेषण करते हैं, ऑक्सीजन छोड़ते हैं और कार्बनिक अणु बनाते हैं।

निहितार्थ

- समुद्र-स्तर में त्वरित वृद्धि:** ग्रीनलैंड की हिम की चादर वैश्विक समुद्र-स्तर वृद्धि में सबसे बड़ा योगदानकर्ता है।
- महासागर परिसंचरण में व्यवधान:** पिघलती हिम बड़ी मात्रा में स्वच्छ जल को छोड़ती है, जो अटलांटिक मेरिडियनल ओवरटर्निंग सर्कुलेशन, AMOC जैसे थर्मोहेलिन परिसंचरण को बाधित करती है।
- वैश्विक जलवायु पर प्रभाव:** काली हिम अधिक ऊष्मा को अवशोषित करती है, जिससे क्षेत्रीय तापन में योगदान होता है और आर्कटिक तापमान में वृद्धि होती है, जो पहले से ही वैश्विक औसत से दोगुनी दर से हो रही है।

- समुद्री और ध्रुवीय पारिस्थितिकी तंत्र:** समुद्र में स्वच्छ जल का प्रवाह लवणता और पोषक चक्रों को बदल देता है, जिससे समुद्री खाद्य शृंखलाएँ प्रभावित होती हैं।

आगे की राह

- बेहतर जलवायु मॉडल:** जैविक कारकों को शामिल करने से समुद्र-स्तर वृद्धि की भविष्यवाणियों की सटीकता बढ़ सकती है।
- शमन रणनीतियाँ:** हिम पिघलने की गति को धीमा करने और फीडबैक लूप को कम करने के लिए वैश्विक तापन को संबोधित करना।
- आगे का शोध:** विभिन्न हिमनद क्षेत्रों में हिम शैवाल की गतिशीलता को समझना ताकि उनके समग्र प्रभाव का आकलन किया जा सके।

ग्रीनलैंड

- विश्व का सबसे बड़ा द्वीप ग्रीनलैंड, उत्तरी अटलांटिक और आर्कटिक महासागरों में स्थित डेनमार्क का एक स्वायत्त क्षेत्र है।
- यह उत्तरी अमेरिका और यूरोप के बीच स्थित है, जिसके पश्चिम में कनाडा और पूर्व में आइसलैंड है।
- ग्रीनलैंड का 80% क्षेत्र बर्फ की चादर से ढका हुआ है, जो अंटार्कटिका के बाद विश्व का दूसरा सबसे बड़ा हिमक्षेत्र है।
- ग्रीनलैंड की राजधानी और सबसे बड़ा शहर नुउक है।



Source: TH

संक्षिप्त समाचार

अली ऐ लिगांग महोत्सव

समाचार में

- असम के सबसे बड़े जनजातीय समुदाय मिसिंग जनजाति ने हाल ही में अली ऐ लिगांग त्योहार मनाया।

अली ऐ लिगांग का परिचय

- फागुन (फरवरी-मार्च) के पहले बुधवार को मनाया जाने वाला यह त्योहार कृषि, परंपरा और सांस्कृतिक विरासत से गहराई से जुड़ा हुआ है।
- ग्रामीण मिसिंग गाँवों में अली ऐ लिगांग सदियों से मनाया जाता रहा है।
- मिसिंग लोगों ने गीले धान की खेती और झूम खेती का अभ्यास करना प्रारंभ कर दिया है।

- त्योहार की शुरुआत लाईटोम तोमचर (त्योहार का झंडा) फहराने से होती है।
- कृषि समृद्धि के लिए डोनी पोलो (सूर्य और चंद्रमा देवता) को प्रसाद चढ़ाया जाता है।
- पुरुष और महिलाएँ खुशी और समृद्धि का प्रतीक गुमराह नृत्य करते हैं।

Source: ANI

छत्रपति शिवाजी महाराज के किले

संदर्भ

- महाराष्ट्र के सांस्कृतिक मामलों के मंत्री के नेतृत्व में एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल छत्रपति शिवाजी महाराज से जुड़े 12 किलों को यूनेस्को विश्व धरोहर का दर्जा दिलाने के लिए पेरिस में है।
 - प्रस्ताव में रायगढ़, राजगढ़, प्रतापगढ़, पन्हाला, शिवनेरी, लोहागढ़, सलहेर, सिंधुदुर्ग, सुवर्णदुर्ग, विजयदुर्ग, खंडेरी और जिंजी किलों को शामिल किया गया है।

छत्रपति शिवाजी महाराज के प्रमुख किले

- रायगढ़ किला:** यह 1674 से 1818 तक मराठा साम्राज्य की राजधानी थी।
 - यह सह्याद्री पर्वत की एक पहाड़ी पर स्थित है।
- राजगढ़ किला:** रायगढ़ में स्थानांतरित होने से पहले शिवाजी महाराज की प्रथम राजधानी।
- प्रतापगढ़ किला:** यह 1659 में शिवाजी महाराज और अफजल खान के बीच प्रसिद्ध युद्ध का स्थल है।
- सिंधुदुर्ग किला:** यह कोंकण तट से दूर एक द्वीप पर स्थित है।
- विजयदुर्ग किला:** इसे अपनी मजबूत तटीय सुरक्षा के कारण ‘पूर्व का जिब्राल्टर’ कहा जाता है।

Source: TH

लेपाक्षी मंदिर

समाचार में

- इतिहासकारों ने सरकार से लेपाक्षी मंदिर को यूनेस्को की विरासत सूची में शामिल कराने के लिए कदम उठाने का आग्रह किया।

लेपाक्षी मंदिर

- यह आंध्र प्रदेश के लेपाक्षी में स्थित है, यह 16वीं शताब्दी का एक उल्लेखनीय वास्तुशिल्प और ऐतिहासिक स्थल है।
- यह अपनी द्रविड़ शैली की वास्तुकला, जटिल पत्थर की नक्काशी और अखंड संचनाओं के लिए प्रसिद्ध है।
- यह भगवान शिव के एक रूप भगवान वीरभद्र को समर्पित है।
- मार्च, 2023 में, यूनेस्को ने लेपाक्षी वीरभद्र मंदिर परिसर को अपनी विरासत स्थलों की अनंतिम सूची में शामिल किया।

वर्तमान स्थिति

- राज्य और केंद्र सरकार को अब मंदिर की वास्तुकला, मूर्तिकला, भित्ति चित्रों और विश्व की सबसे बड़ी अखंड बैल (नंदी) प्रतिमा का विस्तृत अध्ययन करने तथा केंद्र सरकार को एक रिपोर्ट प्रस्तुत करने का काम सौंपा गया है।

Source: TH

होंडुरास

संदर्भ

- भारत ने हाल ही में आए उष्णकटिबंधीय तूफान सारा के मद्देनजर होंडुरास को 26 टन मानवीय सहायता भेजी।



परिचय

- होंडुरास मध्य अमेरिका का एक देश है जो पश्चिम में ग्वाटेमाला एवं अल साल्वाडोर तथा दक्षिण और पूर्व में निकारागुआ के बीच स्थित है।
- उत्तर में, देश कैरेबियन सागर के साथ तट का एक विशाल विस्तार साझा करता है।
- दक्षिण में, यह प्रशांत महासागर के साथ एक छोटा सा विस्तार साझा करता है।
- होंडुरास निकारागुआ के बाद मध्य अमेरिका का दूसरा सबसे बड़ा देश है।
- आधिकारिक भाषा:** स्पेनिश।
- प्रमुख नदियाँ:** पटुका, उलुआ
- प्रमुख पर्वत शृंखला एँ:** ज्वालामुखीय हाइलैंड्स, मध्य अमेरिकी कॉर्डिलिरा।

Source: AIR

टोंकिन की खाड़ी

समाचार में

- वियतनाम के विदेश मंत्रालय ने टोंकिन की खाड़ी में अपने आधार रेखा दावे को परिभाषित करते हुए एक नक्शा प्रकाशित किया है। इस कदम का उद्देश्य क्षेत्र में वियतनाम की संप्रभुता, अधिकारों और अधिकार क्षेत्र की रक्षा करना है।
- मार्च 2023 में, चीन ने एकतरफा रूप से एक नई समुद्री आधार रेखा प्रकाशित की, जिसके कारण वियतनाम ने कूटनीतिक विरोध किया।

टोंकिन की खाड़ी

- यह दक्षिण चीन सागर का उत्तर-पश्चिमी भाग है, जिसकी सीमा चीन, हैनान द्वीप और उत्तरी वियतनाम से लगती है।
- इस खाड़ी में रेड रिवर बहती है, जिसमें वियतनाम (बेन थू और हैफोंग) और चीन (बेझाई) में प्रमुख बंदरगाह हैं।
- टोंकिन की खाड़ी की घटना (1964) ने वियतनाम युद्ध को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, क्योंकि अमेरिकी नौसेना के जहाजों पर कथित हमलों के कारण अमेरिकी सैन्य हस्तक्षेप प्रत्यक्ष हो गया था।

- 2000 में, वियतनाम और चीन ने टोंकिन की खाड़ी समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिससे UNCLOS 1982 के अनुसार विशेष आर्थिक क्षेत्र (EEZ) की सीमाएँ स्थापित हुईं।

Source: TH

BOBP-IGO

संदर्भ

- भारत ने मालदीव के माले में 13वीं गवर्निंग काउंसिल में बंगाल की खाड़ी (BOB) अंतर-सरकारी संगठन की अध्यक्षता संभाली।

बंगाल की खाड़ी कार्यक्रम अंतर सरकारी संगठन (BOBP-IGO) का परिचय

- स्थापना:** 2003 बंगाल की खाड़ी में तटीय मत्स्य पालन के सतत विकास को समर्थन देने के लिए।
- उद्देश्य:** सदस्य देशों (बांग्लादेश, भारत, मालदीव, श्रीलंका) को मत्स्य पालन प्रबंधन पर तकनीकी और प्रबंधन परामर्श प्रदान करना।
- सक्षमता का क्षेत्र:**
 - सदस्य देशों के अनन्य आर्थिक क्षेत्र (EEZs)।
 - राष्ट्रीय अधिकार क्षेत्र से परे सन्निहित क्षेत्र।
- अधिकार:**
 - सदस्य देशों, तीसरे देशों और संगठनों के बीच सहयोग बढ़ाना।
 - छोटे पैमाने और कारीगर मत्स्य पालन पर ध्यान केंद्रित करना।

Source: PIB

शक्तिकांत दास नए प्रधान सचिव नियुक्त

संदर्भ

- भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के पूर्व गवर्नर शक्तिकांत दास को प्रधानमंत्री का प्रधान सचिव नियुक्त किया गया।

परिचय

- वह बिमल जालान (1997-2003) के अलावा छह साल का कार्यकाल पूरा करने वाले दूसरे RBI गवर्नर हैं।

- प्रधान सचिव प्रधानमंत्री कार्यालय (PMO) का प्रशासनिक प्रमुख होता है और उसे PM का सबसे महत्वपूर्ण सहयोगी माना जाता है।
- उसे PM और विदेशी गणमान्य व्यक्तियों के बीच चर्चा किए जाने वाले मामलों पर नोट्स तैयार करने, विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के बीच समन्वय सुनिश्चित करने, PM के समक्ष महत्वपूर्ण आदेशों को साझा करने आदि का कार्य सौंपा जाता है।
- PMO में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार, पीएम के सलाहकार, अतिरिक्त सचिव, संयुक्त सचिव और अन्य वरिष्ठ नौकरशाह भी शामिल होते हैं।

Source: IE

अभिघातजन्य श्वासावरोध

संदर्भ

- हाल ही में नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भगदड़ के 18 पीड़ितों में से पाँच की दम घुटने से मृत्यु हो गई।

परिचय

- दर्दनाक श्वासावरोध एक दुर्लभ और गंभीर स्थिति है जो तब होती है जब ऊपरी छाती या पेट पर गंभीर दबाव पड़ता है, जिससे श्वसन क्रिया और रक्त प्रवाह बाधित होता है।
- कारण:** सामान्यतः भगदड़, वाहन दुर्घटना, इमारत ढहने और औद्योगिक दुर्घटनाओं में देखा जाता है।
- लक्षण:** इसमें सायनोसिस (त्वचा का नीला पड़ना), एडिमा (सूजन), और चेहरे, गर्दन, ऊपरी अंगों और वक्ष के ऊपरी हिस्सों में रक्तस्राव जैसे लक्षण होते हैं।
- उपचार:** सहायक देखभाल, जैसे ऑक्सीजन और द्रव पूरकता और संबंधित चोटों का उपचार, जैसे फ्रैक्चर।

Source: BS

मुद्रास्फीतिजनित मंदी/स्टैगफ्लेशन

समाचार में

- राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की कठोर व्यापार नीतियों ने मुद्रास्फीतिजनित मंदी (स्टैगफ्लेशन) के बारे में चिंताएँ पुनः जगा दी हैं।

मुद्रास्फीतिजनित मंदी क्या है?

- मुद्रास्फीतिजनित मंदी एक आर्थिक स्थिति है जिसमें उच्च मुद्रास्फीति, धीमी आर्थिक वृद्धि और उच्च बेरोजगारी एक साथ घटित होती है।

मुद्रास्फीतिजनित मंदी के कारण

- आपूर्ति आघात:** तेल की कीमतों में उछाल (जैसे, 1970 के दशक का तेल संकट) जैसी घटनाएँ उत्पादन लागत को बढ़ाती हैं, जिससे मुद्रास्फीति और धीमी वृद्धि होती है।
- खराब आर्थिक नीतियाँ:** अत्यधिक धन आपूर्ति, उच्च सरकारी व्यय या व्यापार प्रतिबंध उत्पादकता को बढ़ाए बिना मुद्रास्फीति को बढ़ावा दे सकते हैं।
- संरचनात्मक मुद्दे:** औद्योगिक उत्पादन में गिरावट, श्रम बाजार की अक्षमताएँ और कम निवेश आर्थिक स्थिरता में योगदान करते हैं।

मुद्रास्फीतिजनित मंदी का समाधान?

- आपूर्ति-पक्ष नीतियाँ:** उत्पादन दक्षता को बढ़ावा देना और बाधाओं को कम करना।
- मौद्रिक और राजकोषीय संतुलन:** विकास को बाधित किए बिना मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए ब्याज दरों और सरकारी व्यय का प्रबंधन करना।

- ऊर्जा और व्यापार नीतियाँ:** स्थिर ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करना और व्यापार बाधाओं को कम करना।

Source: LM

वी.ओ.चिदंबरनार बंदरगाह

संदर्भ

- VOC बंदरगाह प्राधिकरण थूथुकुडी में जहाज निर्माण सुविधा स्थापित करने की संभावना खोज रहा है।

परिचय

- स्थान:** वी.ओ. चिदंबरनार बंदरगाह, जिसे पहले तूतीकोरिन बंदरगाह के नाम से जाना जाता था, भारत के दक्षिण-पूर्वी तट पर मन्नार की खाड़ी में, अक्षांश $8^{\circ} 45'N$ और देशांतर $78^{\circ} 13'E$ पर स्थित है।
- रणनीतिक महत्व:** यह पूर्व-पश्चिम अंतर्राष्ट्रीय समुद्री मार्गों के करीब स्थित है, जो इसे समुद्री व्यापार के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र बनाता है।
- प्राकृतिक लाभ:** यह तूफानों और चक्रवाती हवाओं से सुरक्षित है, जिससे बंदरगाह संचालन में न्यूनतम व्यवधान सुनिश्चित होता है।
 - गहरे पानी वाला, सभी मौसमों में खुला रहने वाला बंदरगाह, चौबीसों घंटे, वर्ष
 - के 365 दिन चालू रहता है।



पेरोव्स्काइट-आधारित LEDs (PeLEDs)

समाचार में

- CeNS, बैंगलुरु के भारतीय वैज्ञानिकों ने पेरोव्स्काइट नैनोक्रिस्टल्स की स्थिरता को बढ़ाने के लिए एक अभिनव विधि विकसित की है, जो रंग क्षरण और ताप संवेदनशीलता जैसी प्रमुख चुनौतियों का समाधान करती है।

PeLEDs क्या हैं?

- पेरोव्स्काइट कैल्शियम टाइटेनेट (CaTiO_3) के समान क्रिस्टल संरचना वाले यौगिकों का एक वर्ग है।
- पेरोव्स्काइट-आधारित LED (PeLED) प्रकाश उत्सर्जक डायोड हैं जो प्रकाश उत्सर्जक सामग्री के रूप में पेरोव्स्काइट नैनोक्रिस्टल का उपयोग करते हैं।
- वे उच्च चमक प्रदर्शित करते हैं, बेहतर रंग शुद्धता के साथ उज्ज्वल, ट्यूनेबल प्रकाश उत्सर्जित करते हैं।
- वे उच्च चमक, ऊर्जा दक्षता और रंग ट्यूनेबिलिटी के लिए OLED (ऑर्गेनिक LED) और QLED (क्वांटम डॉट LED) के लाभों को जोड़ते हैं।

Source: BS

बैराइट्स, फेल्सपार, अभ्रक और क्वार्ट्ज का पुनर्वर्गीकरण

संदर्भ

- खान मंत्रालय ने बेराइट्स, फेल्सपार, अभ्रक और क्वार्ट्ज खनिजों को गौण खनिजों की सूची से हटाप्रस्थापित कर प्रमुख खनिजों की श्रेणी में शामिल कर दिया है।

परिचय

- क्वार्ट्ज, फेल्सपार और मीका पेग्माटाइट चट्टानों में पाए जाते हैं और इनका उपयोग इलेक्ट्रॉनिक्स, ऊर्जा भंडारण, एयरोस्पेस एवं स्वास्थ्य सेवा उद्योगों में किया जाता है।
- बैराइट्स का व्यापक रूप से औद्योगिक अनुप्रयोगों जैसे तेल और गैस ड्रिलिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स, टीवी स्क्रीन, रबर, कांच, सिरेमिक, पेट और चिकित्सा अनुप्रयोगों में उपयोग किया जाता है।

- इसका उपयोग अस्पतालों, बिजली संयंत्रों और प्रयोगशालाओं में एक्स-रे उत्सर्जन से बचाव के लिए उच्च घनत्व वाले कंक्रीट में भी किया जाता है।
- इन खनिजों के खनन के लिए पट्टे की शर्तों को अनुदान की तारीख से 50 वर्ष या नवीनीकरण अवधि पूरी होने तक बढ़ा दिया गया है, जिससे खनन कार्यों के लिए दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित होती है।

Source: PIB

फाल्स किलर व्हेल (False Killer Whales)

समाचार में

- ऑस्ट्रेलिया ने तस्मानिया के सुदूर समुद्र तट पर फंसी फाल्स किलर व्हेलों को मारना प्रारंभ कर दिया है।

फाल्स किलर व्हेल्स (स्पूडोर्का क्रैसिडेंस) के बारे में

- फाल्स किलर व्हेल डॉल्फिन परिवार से बड़े, सामाजिक समुद्री स्तनधारी हैं, जो विश्व भर में उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय महासागरों में पाए जाते हैं।
- वे गहरे अपतटीय जल को पसंद करते हैं लेकिन कभी-कभी तटों के पास भी चले जाते हैं।
- वे संचार के लिए इकोलोकेशन और जटिल स्वरों का उपयोग करते हैं।
- प्रदूषण, अत्यधिक मछली पकड़ना, शिकार करना और बाईकैच उनकी जनसंख्या के लिए खतरा है।

Source: BBC

लोक प्रशासन में उत्कृष्टता के लिए प्रधानमंत्री पुरस्कार

समाचार में

- लोक प्रशासन में उत्कृष्टता के लिए प्रधानमंत्री पुरस्कार, 2024 के लिए 1,500 से अधिक नामांकन प्राप्त हुए।

लोक प्रशासन में उत्कृष्टता के लिए प्रधानमंत्री पुरस्कार

- इसकी स्थापना 2006 में की गई थी और यह केंद्र और राज्य सरकारों के जिलों/संगठनों द्वारा किए गए असाधारण काम को मान्यता देता है।

- इस योजना को 2014, 2020 में पुनर्गठित किया गया और 2021 में सुशासन, गुणात्मक उपलब्धियों और अंतिम-मील कनेक्टिविटी पर ध्यान केंद्रित करने के लिए नया रूप दिया गया।
- 2024 के लिए, पुरस्कार तीन श्रेणियों में योगदान को मान्यता देंगे:
 - जिलों का समग्र विकास
 - आकांक्षी ब्लॉक कार्यक्रम
 - नवाचार

Source: PIB

